ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 **PP. No.- 231-234**
I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.-I, Issues-35, YEAR-Jan-Mar. 2025

महाकुंभ : एक वैश्विक सांस्कृतिक घटना के रूप में

डॉ0 योगेन्द्र जैन
अतिथि विद्वान–समाजशास्त्र, शासकीय महाविद्यालय शामगढ़ (म.प्र.) भारत

Received-18.03.2025, Revised-23.03.2025 Accepted-30.03.2025 **E-mail : jainyogi2015@gmail.com**

सारांशः महाकुंभ उत्सव विश्व का सबसे बड़ा धार्मिक समागम है, जो पारंपरिक हिंदू तीर्थ यात्रा से वैश्विक सांस्कृतिक घटना में बदल गया है। विश्व भर के लाखों भक्त, आध्यात्मिक साधकों और पर्यटकों को आकर्षित करने वाला यह उत्सव राष्ट्रीय और धार्मिक सीमाओं को पार करता है। प्रस्तुत शोध पत्र के माध्यम से महाकुंभ मेले के वैश्विक महत्त्व अता की जांच करना है। इसकी ऐतिहासिक जड़ों, धार्मकि महत्त्व, अंतर सांस्कृतिक आदान प्रदान और इसके आयोजन और धारणा पर वैश्वीकरण के प्रभाव का विश्लेषण करना है। शोध पत्र के माध्यम से यह भी जानने का प्रयास किया गया है कि महाकुंभ आयोजन वैश्विक आध्यात्मिकता, पर्यटन और सांस्कृतिक आदान प्रदान में किस प्रकार योगदान दे रहा है।

कुंजीभूत शब्द– महाकुंभ, वैश्विक संस्कृति, तीर्थयात्रा, धार्मिक समागम, आध्यात्मिक, वैश्विक महत्त्व, पर्यटन और संस्कृति

प्रस्तावना– 'कुम्भ' संस्कृत शब्द है जिसका अर्थ है 'घड़ा'। पौराणिक कथाओं के अनुसार देवताओं और असुरों के मध्य समुद्र मंथन के दौरान निकले दिव्य अर्मत घड़े से अर्मत की बूंदें चार मुख्य स्थान हरिद्वार गंगा में ,प्रयाग गंगा, सरस्वती और यमुना में, नासिक त्रयंबकेष्वर गोदावरी में और उज्जैन षिप्रा नदी में। अर्द्धकुंभ प्रतीक छै वर्ष में हरिद्वार और प्रयागराज में आयोजित किया जाता है। पूर्णकुंभ प्रत्येक 12 वर्ष में उपरोक्त चार स्थानों पर आयोजित किया जाता है। ग्रहों की मुख्य दशा के कारण 2025 में प्रयाग राज्य में महाकुंभ आयोजित हो रहा है, जो कि हिदुं परंपरा में पावन तीर्थ अवसर है।

आधुनिकता की दौड़ में कुछ ही आयोजनों में इतनी शक्ति होती है कि वे लाखों लोगों को एक साथ समंजस्य कि डोर में बांध सकें। महाकुंभ विष्व का सांति पूर्ण समागम है, जिसमें लाखों तीर्थयात्री पवित्र नदियों में स्नान कर स्वयं को पाप। मुक्त करा अध्यात्म के मार्ग पर चलते हैं। 2017 में यूनेस्को द्वारा मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत के रूप में मान्यता प्राप्त कुंभ आधुनिकीकरण के युग में प्राचीन परंपराओं के अस्तित्व और विकास का एक प्रमाण है।[1]

2025 कहा, प्रयाग महाकुंभ उत्सव महज एक लोगों की सभा नहीं बल्कि आत्म खोज की और एक मार्ग है। यह श्रद्धालुओं को आत्मनिरीक्षण में संलग्न होने और औपचारिक और प्रतीकात्मक कार्यों से परे है। ईश्वर के साथ आत्मालीन होने का अवसर प्रदान करता है। वहाँ कम भविष्य में सद्भाव, पवित्रता और ज्ञान का प्रतीक है। यह चिरस्थायी यात्रा एक सशक्त अन स्मारक है ककमानव पों की विविधता के बावजूद, हम सभी एक ही पथ पर है। जो आत्मसाक्षात्कार शांत। और पवित्रता के इस स्थायित्व की ओर ले जाता है। दुनिया भर के लाखों श्रद्धालु सतं, शिक्षाविद और पर्यटक महाकुंभ मेले में शामिल होकर आध्यात्मिक मार्ग की ओर अग्रसरित हो रहे हैं। महाकुंभ उत्सव हिदुं धार्मिक मान्यता से जुड़ा हुआ है, परंतु इसकी भव्यता आध्यात्मिकता ने विश्व भर का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया है। 13 जनवरी से 26 फरवरी 2025 तक चलने वाले महाकुंभ उत्सव में लगभग 400 मिलियन लोग शामिल हो रहे हैं, जो अब तक के इतिहास में महाकुंभ को सबसे बड़ा धार्मिक समागम बना देगा।

महाकुंभ उत्सव सिर्फ एक धार्मकि उत्सव ही न होकर यह एक अनूठी सांस्कृतिक घटना है जो भारत की स्थिति को वैश्विक स्तर पर बदलने की क्षमता रखता है। विश्व के सबसे बड़े समागम के रूप में यह एकता, आध्यात्मिकता, नवीनीकरण और धार्मिक स्थिरता का प्रतीक है जो भारत की विरासत को प्रदर्शित करने के लिए एक अनूठा मंच प्रदान करता है।

महाकुंभ की जटिलता का अध्ययन करने के लिए देश विदेश से प्रमुख विश्वविद्यालय और अन्य शैक्षणिक संस्थान शोध संस्थान महाकुंभ के दौरान प्रयागराज में रहेंगे, ताकि विश्व के सबसे बड़े धार्मिक समागम से जुड़े विभिन्न पहलुओं का अध्ययन कर सकें। हावर्ड, स्टैनफोर्ड, लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स ,क्योटो यूनिवर्सिटी आईआईएम, अहमदाबाद, आइआइटी कानपुर, जेएनयू जैसे कुछ प्रमुख संस्थान हैं, जो प्रयागराज में प्रोफेसर शोधार्थियों को भेजने जा रहे हैं।[2] यह सभी संस्थान आर्थिक प्रभाव, भीड़ प्रबंधन, सामाजिक सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों और खाद्य वितरण श्रृंखला जैसे कई विषयों पर चर्चा करते हैं। प्रयागराज में ये वैश्विक शैक्षणिक शोध दल महाकुंभ को ना केवल एक धार्मिक उत्सव के रूप में बताते हैं बल्कि एक बहुआयामी कार्यक्रम के रूप में। जिसके लिए सावधानीपूर्वक अध्ययन और समाज की आवश्यकता है। विश्व स्तर पर होने वाले धार्मिक समागम में लोगों का आपसी सामंजस्य, प्रशासन का आम जनता के साथ व्यवहार, छोटे मोटे व्यापार, अपराध, स्वच्छता, धार्मिक आस्था अथवा मनोरंजन मात्र इत्यादि का अध्ययन करना आवश्यक है।

वैश्विक आध्यात्मिक आदान प्रदान के केंद्र के रूप में महाकुंभ – लाखों की जनसंख्या में लोग विश्व भर से भारत में महाकुंभ में भाग लेते हैं, जो एक महत्वपूर्ण धार्मिक उत्सव है। उत्तर प्रदेश सरकार के अनुमान के अनुसार करीब 1500,000 पर्यटक शामिल हो रहे हैं महाकुंभ में।[3] महाकुंभ वैश्विक आध्यात्मिक आदान प्रदान के केंद्र के रूप में विविध सांस्कृतिक, आध्यात्मिक और भौगोलिक प्रश्ठभूमियों से आने वाले लोगों को एक साथ आने और अपने अनुभव, ज्ञान और प्रथाओं को साझा करने के लिए एक अनूठा मंच प्रदान करता है।

अंतर धार्मिक बहस के रूप में महाकुंभ एक ऐसा मंच प्रस्तुत करता है जहाँ लोग विभिन्न धार्मिक प्रष्ठभूमि से आध्यात्मिकता, दर्शन और सांस्कृति पर चर्चा कर सकते हैं एक दुसरे के धार्मिक विचारों को समझ सकते हैं। मानव वैज्ञानिक आध्यात्मिक कार्यशाला के रूप में महाकुंभ योग, ध्यान, आयुर्वेद और वैदिक दर्शन जैसे विषयों पर चर्चा। के रूप में उभर कर सामने आ सकता है।

अंतर सांस्कृतिक समझ के माध्यम से सांस्कृतिक और आध्यात्मिक बाधाओं को तोड़ने में महाकुंभ के जरिए सहायता मिल सकती है। महाकुंभ आध्यात्मिक विकास, आत्मचितंन और व्यक्तिगत परिवर्तन का अवसर प्रदान करता है महाकुंभ आध्यात्मिक साधकों और राजनेताओं का एक वैश्विक समुदाय बनाने में मदद करता है, जो एकता और सहयोग की भावना को बढ़ावा देते हैं। महाकुंभ समागम भारतीय सांस्कृतिक परंपराओं और आध्यात्मिकता को संरक्षित और बढ़ावा देने में मदद करता है और साथ ही सांस्कृतिक आदान प्रदान और नवाचार के लिए मंच प्रदान करता है।

अनुरूपी लेखक/ संयुक्त लेखक

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.-I, Issues-35, YEAR-Jan-Mar. 2025

शोध का उद्देश्य– वैश्विक स्तर पर भारत की सांस्कृतिक प्रतिनिधित्व अता के रूप में 'महाकुंभ' का अध्ययन करना।

शोध पद्धति– प्रस्तुत शोध उद्देश्य का अध्ययन करने के लिए प्रयागराज मे आयोजित महाकुम्भ 2025 के प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों ही श्रोत के माध्यम से आंकड़े एकत्र किये गए हैं। प्राथमिक स्रोत में काशी विद्यापीठ के 50 शोधार्थियों का चयन असंभावित निदर्शन पद्धति के उद्देश्यपूर्ण निदर्शन के माध्यम से किया गया है। चयनित शोधार्थियों से आंकड़ों को साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से एकत्र किया गया है। द्वितीयक स्रोत के लिए पत्र पत्रिका, समाचार पत्र इत्यादि का प्रयोग किया गया है।

• कुल 50 शोधार्थियों में से 76 प्रतिशत शोधार्थी महाकुंभ में शामिल हुए है। चयनित उत्तरदाताओं से साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से प्रश्नों की अनुसूची भरवाई गई कुल 50 उत्तरदाताओं में से 24 प्रतिशत उत्तरदाता महाकुंभ उत्सव में शामिल नहीं हुए ,परन्तु वे महाकुंभ की खबरों और सूचनाओं से निरंतर जुड़े हुए थे।

सारणी संख्या – (01) महाकुंभ आयोजन के बारे में जानकारी मिलने की स्थिति –

क्रमांक	उत्तरदाताओं के जानकारी का स्त्रोत	संख्या	प्रतिशत
1	सोशल मीडिया	22	40
2	आसपास के लोगों से	20	42
3	समाचार पत्रों से	08	14
कुल उत्तरदाता		50	100

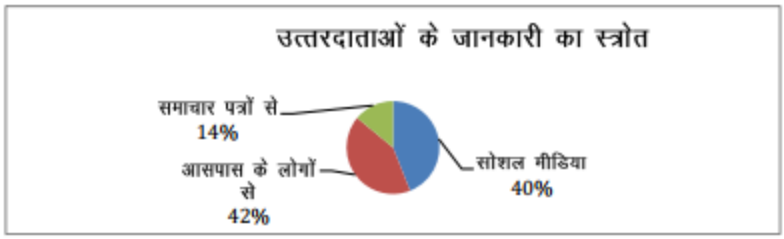

• प्रस्तुत शोध पत्र के उत्तरदाताओं का महाकुंभ के बारे में जानकारी के शोध सोशल मीडिया के माध्यम से 40 प्रतिशत उत्तरदाताओं को महाकुंभ की जानकारी प्राप्त हुई। वहीं, आसपास के लोगों से 42 प्रतिशत उत्तरदाताओं को महाकुंभ की जानकारी मिलती है और 14 प्रतिशत उत्तरदाता समाचार पत्रों के माध्यम से महाकुंभ की जानकारी ग्रहण करते हैं।

सारणी सख्या :– (02) प्रयाग महाकुंभ उत्सव के समग्र माहौल की स्थिति –

क्रमांक	उत्तरदाताओं का द्रष्टिकोण	संख्या	प्रतिशत
1	आध्यात्मिक	35	70
2	शांतिमय सौहार्दपूर्ण	13	26
3	भावविहीन	02	04
4	अराजकतापूर्ण	00	00
कुल उत्तरदाता		50	100

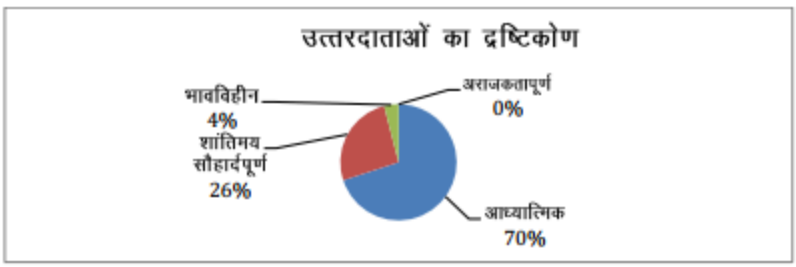

• प्रस्तुत शोध पत्र के उत्तरदाता महाकुंभ के समग्र माहौल को कुछ इस प्रकार वर्णित करते हैं जिसमें 70 प्रतिशत उत्तरदाता वहाँ के कुम्भं के माहौल को आध्यात्मिक दृष्टिकोण से वर्णित करते हैं। 26 प्रतिशत उत्तरदाताओं का मानना है कि महाकुंभ का माहौल शांतिमय, सौहार्दपूर्ण है। 4 प्रतिशत उत्तरदाता महाकुंभ को भावविहीन की दृष्टि से देखते हैं, वही एक भी उत्तरदाता ऐसे नहीं थे जिन्होंने महाकुंभ को अराजकतापूर्ण दृष्टिकोण से देखा हो।

सारणी सख्या – (03) वैश्विक मीडिया महाकुंभ को भारतीय परंपराओं के प्रतिनिधि के रूप में प्रदर्शित करने की स्थिति

क्रमांक	उत्तरदाताओं का मत	संख्या	प्रतिशत
1	हाँ	46	92
2	नहीं	04	08
कुल उत्तरदाता		50	100

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.-I, Issues-35, YEAR-Jan-Mar. 2025

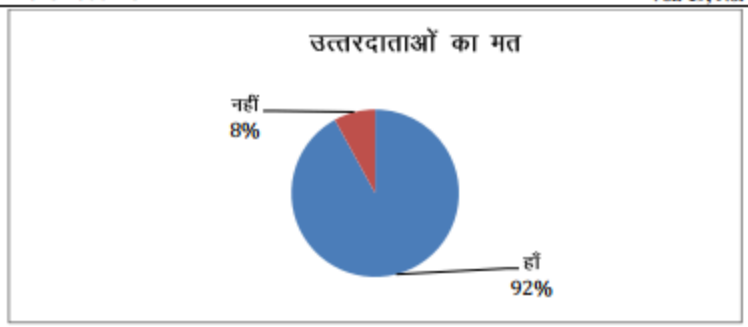

• 92 प्रतिशत उत्तरदाताओं का मानना है कि वैश्विक मीडिया महाकुंभ को भारतीय परम्परा के प्रतिनिधि के रूप में प्रदर्शित करती है, वहीं 8 प्रतिशत उत्तरदाताओं का यह भी मानना है कि वैश्विक मीडिया यह कार्य करने में असफल रही है।

सारणी सख्या– (04) महाकुंभ में अंतरराष्ट्रीय पर्यटकों को सर्वाधिक आकर्षित करने वाले तत्व –

क्रमांक	आकर्षित करने वाले तत्व	संख्या	प्रतिशत
1	धार्मिक अनुष्ठान के रूप में	78	62
2	सांस्कृतिक विविधता के रूप में	31	36
3	मनोरंजन के रूप में	01	02
कुल उत्तरदाता		50	100

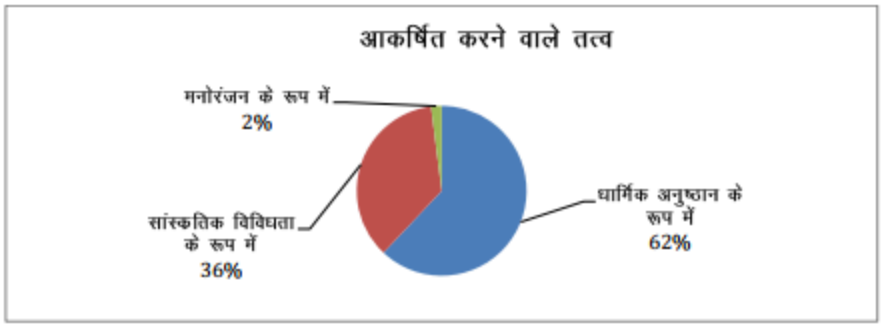

• प्रस्तुत शोध पत्र के 62 प्रतिशत उत्तरदाताओं का मानना है कि महाकुंभ में होने वाले धार्मिक अनुष्ठान अंतरराष्ट्रीय पर्यटकों को सबसे अधिक आकर्षित करते हैं। 36 प्रतिशत उत्तरदाताओं का मानना है कि भारत की सांस्कृतिक विविधता अंतराष्ट्रीय पर्यटकों कों प्रयागराज तीर्थ तक खींच लाती है। वही 2 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने महाकुंभ को अंतरराष्ट्रीय पर्यटकों के लिए मनोरंजन मात्र के रूप में देखा है।

सारणी सख्या– (05) महाकुंभ आयोजन से भारत की वैश्विक छवि –

क्रमांक	उत्तरदाताओं का द्रष्टिकोण	संख्या	प्रतिशत
1	सकारात्मक, एकता और विश्वास के प्रतीक के रूप में	46	92
2	नकारात्मक, भीड़ व कुप्रबन्धन के रूप में	03	06
3	निष्प्रभाव	01	02
कुल उत्तरदाता		50	100

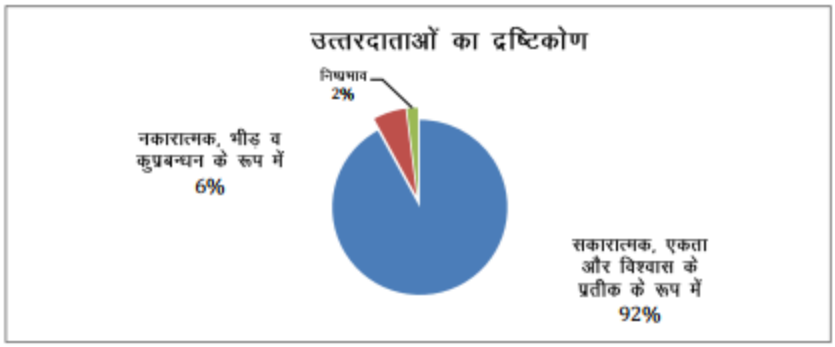

• प्रस्तुत शोध पत्र के 92 प्रतिशत उत्तरदाताओं का मानना है कि महाकुंभ आयोजन से भारत की जो वैश्विक छवि है वो सकारात्मकता,विश्वास एवं एकता के प्रतीक के रूप में विश्व को प्रभावित करेगी। 6 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने महाकुंभ को नकारात्मकता,

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-19, No.-I, Issues-35, YEAR-Jan-Mar. 2025

भीड़ एवं कुप्रबन्धन के रूप में देखा जो कि भारत की वैश्विक छवि को नश्ट कर रही है। वही 2 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने महाकुंभ आयोजन को भारत की वैश्विक छवि पर निष्प्रभाव के रूप में देखा है।

सारणी सख्या :– (06) महाकुम्भ पर्व में यूनेस्को द्वारा मान्यता प्राप्त सांस्कृतिक विरासत कार्यक्रम बनने की क्षमता है, के प्रति उत्तरदाताओं का द्रष्टिकोण

क्रमांक	उत्तरदाताओं का मत	संख्या	प्रतिशत
1	हाँ	44	88
2	नहीं	06	12
कुल उत्तरदाता		50	100

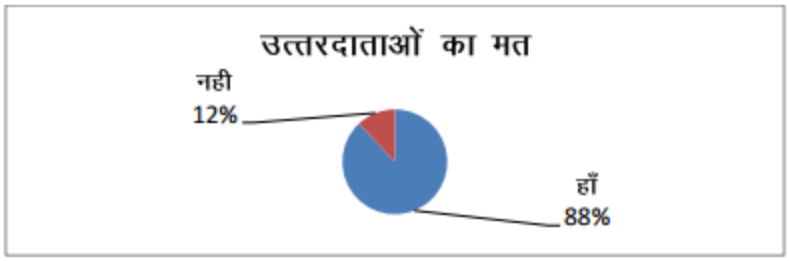

• प्रस्तुत शोध पत्र के 88 प्रतिशत उत्तरदाताओं का मानना है कि महाकुंभ पर्व में यूनेस्को द्वारा मान्यता प्राप्त सांस्कृतिक विरासत कार्यक्रम बनने की क्षमता है, जबकि 12 प्रतिशत उत्तरदाताओं का मत हैं कि महाकुंभ पर्व को युनेस्को द्वारा मान्यता प्राप्त सांस्कृतिक विरासत कार्यक्रम बनने की क्षमता नहीं है।

निष्कर्ष– महाकुंभ 2025 के आयोजन को सोशल मीडिया ने बहुत प्रचारित किया। महाकुंभ अमृत स्नान हैशटैग सोशल मीडिया प्लैटफॉर्म एक्स पर नंबर वन ट्रेंड बना। प्रस्तुत शोध पत्र के 44 प्रतिशत उत्तरदाताओं को भी महाकुंभ की गतिविधियों का सज्ञान सोशल मीडिया के माध्यम से हुआ जो यह बताता है कि वर्तमान मैं सभी सोशल मीडिया के साथ अधिक समय व्यतीत कर देश दुनिया की खबर सोशल मीडिया के माध्यम से ही प्राप्त करते हैं। 42 प्रतिशत उत्तरदाताओं को महाकुंभ के बारे में अपने मित्रों, पड़ोसियों के आसपास के लोगों से उनको जानकारी मिली, जिससे यह जानने को मिलता है कि वैश्विक युग में भी व्यक्ति आपसी बातचीत के माध्यम से स्वयं को सामाजिकता से जोड़कर जानकारी ग्रहण करने में रुचि रखता है। वैश्विक युग में सोशल मीडिया ने आपसी बातचीत को कम तो किया, परंतु यह कहना गलत होगा कि सोशल मीडिया आने से व्यक्तियों का आपसी संवाद शून्य हो गया है। शोध पत्र के 14 प्रतिशत उत्तरदाता समाचार पत्र के माध्यम से महाकुंभ की जानकारी ग्रहण किए हैं, जो उनकी गहरी समझ, विश्वसनीयता को प्रस्तुत करता है जो सोशल मीडिया के भटकाव से स्वयं को दूर रखना उचित समझते हैं। महाकुंभ एक वैश्विक सांस्कृतिक घटना है जो सदियों से दुनियाभर के लोगों का ध्यान आकर्षित करती रही है। यह भव्य उत्सव भारतीय संस्कृति, आध्यात्मिकता और पारंपरिक उत्सव है और भारत देश की पहचान का अभिन्न अंग है। महाकुंभ यूनेस्को के सांस्कृतिक उत्सव विरासत के रूप में शामिल होने की क्षमता रखता है। महाकुंभ जीवन का एक ऐसा उत्सव है जो हमें प्राकृतिक पर्यावरण में रहकर प्रकृति और मानव के साथ सद्भाव और सौहार्द के साथ जीवन व्यतीत करने के महत्त्व को समझता है। महाकुंभ वैश्विक घटना के साथ साथ आध्यात्मिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, आर्थिक घटना भी है, जिसमें योग साधना, पवित्रता, धार्मिक अनुष्ठान, रोजगार सभी चीजें शामिल हैं। जैसे जैसे दुनिया तेजी से वैश्विकृत और आपस में जुड़ती जा रही है। महाकुंभ भारतीय सांस्कृतिक और पहचान का एक शक्तिशाली प्रतीक बनता जा रहा है। इस वैश्विक उत्सव में लोगों को एक साथ लाने और अंतर सांस्कृतिक समझ और आदान प्रदान को बढ़ावा देने की शक्ति है। महाकुंभ एक अनुस्मारक है कि हमारे मतभेदों के बावजूद हम सभी जुड़े हुए हैं और हम एक समान मानवता साझा करते हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. **1.The Maha Kumbh Mela 2025: Embracing Unity in the Sacred Waters of Prayagraj**
https://pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2070943
2. 2.**Mega management: Why Western universities are studying Mahakumbh**
https://m.economictimes.com/news/india/mega-management-why-western-uivs-are-studying-mahakimbh/articleshow/117125261.cms
3. **Government of India Press Information Bureau**
https://pib.gov.in/PressReleaseframePage.aspx?PRID=2094640#:~:text=According%20to%20the%20government%E2%80%99s%20estiate,around%2015%20lakh%20foreign%20tourists

*****